वसंत भाग 2

‘कठपुतली’

कठपुतली/Puppet

कविता के बारे में

इस कविता में कठपुतलियाँ स्वतंत्रता की इच्छा से स्वयं अपनी बात व्यक्त कर रही हैं। उनके समक्ष स्वतंत्रता को साकार बनानेवाली चुनौतियाँ हैं। धागे में बँधी हुई कठपुतलियाँ पराधीन हैं। इन्हें दूसरों के इशारे पर नाचने से दुख होता है। दुख से बाहर निकलने के लिए एक कठपुतली विद्रोह कर देती है।

वह अपने पाँव पर खड़ी होना चाहती है। उसकी बात सभी कठपुतलियों को अच्छी लगती है। स्वतंत्र रहना कौन नहीं चाहता! लेकिन, जब पहली कठपुतली पर सबकी स्वतंत्रता की जिम्मेदारी आती है, वह सोच-समझकर कदम उठाना जरूरी समझती है।

कविता – भावार्थ

<u>कठपुतली</u>
गुस्से से <u>उबली</u>
बोली– यह <u>धागे</u>
क्यों हैं मेरे
पीछे–आगे?
इन्हें तोड़ दो;
मुझे मेरे <u>पाँवों</u>
पर छोड़ दो।

<u>भावार्थ</u>: कवि ने यहाँ एक कठपुतली के मन के भावों को दर्शाया है। जो कठपुतली दूसरों के इशारों पर नाचते–नाचते परेशान हो गयी है, और अब वो सारे धागे तोड़कर स्वतंत्र होना चाहती है। वो गुस्से में कह उठती है कि मेरे आगे–पीछे बंधे ये सभी धागे तोड़ दो और अब मुझे मेरे पैरों पर छोड़ दो। मुझे अब पराधीन नहीं रहना, अर्थात मुझे आत्मनिर्भर बनना है।

कविता – भावार्थ

सुनकर बोलीं
और–और
कठपुतलियाँ
कि हाँ, बहुत
दिन हुए हमें
अपने मन के
छंद छुए।

भावार्थ: कवि ने इन पंक्तियों के माध्यम से अन्य सभी कठपुतलियों के मन के भाव दर्शाए हैं। पहली कठपुतली के मुँह से स्वतंत्र होने की बात सुनकर अन्य कठपुतलियाँ भी आजाद होना चाहती हैं। वे कहती कि हाँ बहुत दिन हुए हमें अपने मन की इच्छा पूरी करने का कोई अवसर नहीं मिला। अतः सभी कठपुतलियाँ स्वतंत्रता के प्रति विद्रोह तक करने के लिए तैयार हो जाती हैं।

कविता – भावार्थ

मगर...पहली
कठपुतली
सोचने लगी–
ये कैसी
इच्छा मेरे
मन में
जगी?

भावार्थ: यहाँ कवि ने पहली कठपुतली के मन के असमंजस भरे भावों को दिखाया है। जब सभी कठपुतलियाँ पहली कठपुतली की स्वतंत्र होने की बात का समर्थन करती हैं, तो पहली कठपुतली सोच में पड़ जाती है कि क्या वो सही कर रही है? उसने तो केवल अपनी आजादी के बारे में सोचा था इसलिए क्रोधित हो गई थी, परंतु जब सबकी आजादी की जिम्मेदारी आ गई तब वह कोई कदम सोच–समझकर उठाना उचित समझती है, क्योंकि "आजाद हो जाना सरल है लेकिन आजादी को बनाए रखना कठिन है।"

कठिन शब्दों के अर्थ

1. कठपुतली
2. उबली
3. धागे
4. पाँवों
5. छंद
6. इच्छा

1. डोरे से बाँधकर नचाई जानेवाली काठ की पुतली।
2. अत्यधिक क्रोध/गुस्सा
3. बटा हुआ महीन सूत, डोरा
4. पैर
5. मन के भाव
6. कामना, चाह

प्रश्नोत्तर भाग

प्रश्न-1 कठपुतली को गुस्सा क्यों आया?

उत्तर: कठपुतली लंबे समय से धागों के बंधन में बंधी-बंधी परेशान हो चुकी है। उसे हमेशा दूसरों की उंगलियों के इशारों पर नाचना पड़ता है। इसीलिए उसे गुस्सा आया। उसे इन बेड़ियों से स्वतंत्र होकर अपने पैरों पर खड़ा होना है अर्थात आत्मनिर्भर बनना है। वह पराधीनता से छुटकारा पाना चाहती है।

प्रश्न-2 कठपुतली को अपने पाँवों पर खड़ी होने की इच्छा है, लेकिन वह क्यों नहीं खड़ी होती?

उत्तर: कठपुतली स्वतंत्र होकर अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती है लेकिन खड़ी नहीं होती, क्योंकि जब बाकी कठपुतलियों की स्वतंत्रता की जिम्मेदारी उसके ऊपर आती है तो वह डर जाती है कि कहीं उसका यह निर्णय उसे या अन्य कठपुतलियों को किसी मुश्किल में न डाल दे।

प्रश्न-3 पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुतलियों को क्यों अच्छी लगी?

उत्तर: पहली कठपुतली की बात अन्य सभी कठपुतलियों को इसलिए अच्छी लगी क्योंकि वो भी स्वतंत्र होना चाहती थीं। उन्हें भी अपने पैरों पर खड़ा होना था, अपनी इच्छा के अनुसार चलना था, पराधीन नहीं रहना था, इसलिए उन्हें पहली कठपुतली की बात बहुत पसंद आई।

प्रश्न-4 पहली कठपुतली ने स्वयं कहा कि – ‘ये धागे/क्यों हैं मेरे पीछे–आगे?/ इन्हें तोड़ दो;/मुझे मेरे पाँवों पर छोड़ दो।’ –तो फिर वह चिंतित क्यों हुई कि–‘ये कैसी इच्छा/मेरे मन में जगी?’ नीचे दिए वाक्यों की सहायता से अपने विचार व्यक्त कीजिए–

- उसे दूसरी कठपुतलियों की जिम्मेदारी महसूस होने लगी।
- उसे शीघ्र स्वतंत्रत होने की चिंता होने लगी।
- वह स्वतंत्रता की इच्छा को साकार करने और स्वतंत्रता को हमेशा बनाए रखने के उपाय सोचने लगी।
- वह डर गई, क्योंकि उसकी उम्र कम थी।

उत्तर: पहली कठपुतली के मन में स्वतंत्र होने की भावना प्रबल होती है, वो धागों में बंधे–बंधे परेशान हो चुकी है। इसलिए उसने अपनी स्वतंत्रता के लिए आवाज़ उठाई। इस पर अन्य सभी कठपुतलियां उसका समर्थन करती हैं और उसके साथ विद्रोह करने की बात कहती हैं। तब पहली कठपुतली को एहसास होता है कि उसके ऊपर कितनी बड़ी ज़िम्मेदारी आ गयी है। वो सोचने लगती है कि क्या वो इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी निभा पाएगी? इस बात का क्या भरोसा है कि स्वतंत्र होने के बाद वो ख़ुश रह पाएंगी? इन बातों की वजह से ही पहली कठपुतली अपने फैसले के बारे में दोबारा सोचने पर मजबूर हो गयी।

कविता से आगे

प्रश्न1: 'बहुत दिन हुए/हमें अपने मन के छंद छुए।' – इस पंक्ति का अर्थ और क्या हो सकता है? अगले पृष्ठ पर दिए हुए वाक्यों की सहायता से सोचिए और अर्थ लिखिए–

(क) बहुत दिन हो गए, मन में कोई उमंग नहीं आई।

(ख) बहुत दिन हो गए, मन के भीतर कविता–सी कोई बात नहीं उठी, जिसमें छंद हो, लय हो।

(ग) बहुत दिन हो गए, गाने–गुनगुनाने का मन नहीं हुआ।

(घ) बहुत दिन हो गए, मन का दुख दूर नहीं हुआ और न मन में खुशी आई।

उत्तर: ‘बहुत दिन हुए हमें अपने मन के छंद छुए’ इसका अर्थ है कि- बहुत दिन हो गए मन का दुःख दूर नहीं हुआ और न मन में खुशी आई अर्थात कठपुतलियाँ परतंत्रता से अत्यधिक दुखी हैं। उन्हें ऐसा लगता है जैसे वे अपने मन की चाह को जान ही नहीं पातीं। पहली कठपुतली के कहने से उनके मन में आजादी की उमंग जागी।

प्रश्न2: नीचे दो स्वतंत्राता आंदोलनों के वर्ष दिए गए हैं। इन दोनों आंदोलनों के दो-दो स्वतंत्राता सेनानियों के नाम लिखिए-
(क) सन् 1857, (ख) सन् 1942

उत्तर:
(क) सन् 1857- 1. महारानी लक्ष्मीबाई, 2. मंगल पांडे
(ख) सन् 1942- 1. महात्मा गांधी, 2. जवाहर लाल नेहरू

भाषा की बात

प्रश्न1: कई बार जब दो शब्द आपस में जुड़ते हैं तो उनके मूल रूप में परिवर्तन हो जाता है। कठपुतली शब्द में भी इस प्रकार का सामान्य परिवर्तन हुआ है। जब काठ और पुतली दो शब्द एक साथ हुए कठपुतली शब्द बन गया और इससे बोलने में सरलता आ गई। इस प्रकार के कुछ शब्द बनाइए– जैसे– काठ (कठ) से बना–कठगुलाब, कठफोड़ा। (हाथ–हथ सोना–सोन मिट्टी–मट)

उत्तर:

- हाथ और करघा– हथकरघा
- हाथ और कड़ी- हथकड़ी
- सोन और परी– सोनपरी
- मिट्टी और कोड– मटकोड, मटमैला
- हाथ और गोला– हथगोला
- सोन और जुही– सोनजुही

प्रश्न2: कविता की भाषा में लय या तालमेल बनाने के लिए प्रचलित शब्दों और वाक्यों में बदलाव होता है। जैसे- आगे-पीछे अधिक प्रचलित शब्दों की जोड़ी है, लेकिन कविता में 'पीछे-आगे' का प्रयोग हुआ है। यहाँ 'आगे' का '...बोली ये धागे' से ध्वनि का तालमेल है। इस प्रकार के शब्दों की जोड़ियों में आप भी परिवर्तन कीजिए- दुबला-पतला, इधर-उधर, ऊपर-नीचे, दाएँ-बाएँ, गोरा-काला, लाल-पीला आदि।

उत्तर:

- पतला-दुबला
- उधर-इधर
- निचे-ऊपर
- बाएँ-दाएँ
- काला-गोरा
- पीला-लाल

धन्यवाद